ॐ श्री सत्नाम साक्षी

महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का
संक्षिप्त जीवन परिचय एवं उनके
जीवन से जुड़े कुछ मार्मिक

पावन प्रसंग

संकलन / संपादक
प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज.)
श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद (गुज.)

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का
संक्षिप्त जीवन परिचय एवं उनके
जीवन से जुड़े कुछ मार्मिक

पावन प्रसंग

संकलन / संपादक
प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज.)
श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद (गुज.)

यह प्रार्थना स्वामी सर्वानन्द जी महाराज प्रतिदिन प्रातःकाल आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के समक्ष किया करते थे।

❊ प्रार्थना ❊

हे परमपिता ! समर्थ बाबा ! सच्चिदानंदघन ! परिपूर्ण परमात्मा ! ब्रह्माण्ड नायक ! सदा सुखदायक ! अविनाशी ! घट घट वासी ! स्वयं प्रकाशी ! सब सुख राशी ! सच्ची सुमति देना । स्वांग की लज्जा रखना । नगर बन में रक्षा कीजे। अभय दान प्रभु सबको दीजे।।
देश - परदेश दासों - बच्चों की रक्षा करना। धर्म की लज्जा रखना। अपनी चलती चलाना।।
अन्तकाल सुहेली करना। तन-मन-धन वाणी करके। मेरे द्वारा किसी की दिल दुःखी न होवे। सिर धर आयुस करूँ तुम्हारा। परम धर्म ये नाथ हमारा।।
सुत अपराध करत है जेते, जननी चीत न राखत तेते।।
जैसे बालक भाव स्वभावे, लख अपराध कमावे। कर उपदेश झिण के बहु भान्ती, बहुरि पिता गल लावे।।
सत्गुरु तुम पूरन करो, मेरी यह अरिदास। कहे टेऊँ मन में कभी, रहे न जग की आस।।
आशवन्दी गुरु तो दरि आई, तुम बिन ठौर न काई। तूं हरि दाता तूं हरि माता, मेरी आश पुजाईं।।
पाइ पलउ मैं पेर पियादी, आयसि हेत मंझाईं। तन मन धन अरिदास करे मैं, मांगत नामु सनेही।।
नामु तुम्हारा साबुन करिसां, धोसां पाप सभेई। कहे टेऊँ गुरु लोक तीन में, आवागमन मिटाईं।।
ॐ शांति ! शांति !! शांति !!!

ॐ सत्नाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के द्वितीय पीठाधीश्वर अनन्य गुरु भक्त सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

संक्षिप्त जीवन परिचय

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जन्म शुभ सम्वत् १९५४ के आश्विन मास की शुक्ला चतुर्दशी (सिंधी तिथि- १२) गुरुवार के शुभ दिन, सिंध प्रदेश में भिटशाह नामक गाँव में हुआ था !

स्वामी जी का जन्म धनजानी परिवार में हुआ था और ननिहाल फूल वंशी था ! युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज रिश्ते में उनके मामा जी लगते थे !

स्वामी जी के पिता श्री का नाम **'श्री सेवकराम जी'** और माता श्री का नाम **'ईश्वरी देवी'** था !

स्वामी जी का बाल्यकाल का नाम **'सीरू'** था ! आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने **'नाम दान की दीक्षा'** देने के पश्चात् उनका नाम **'सर्वानन्द'** रखा !

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज हमेशा स्वामी जी को ब्रह्मज्ञान की लोरी और अध्यात्म ज्ञान का उपदेश देते थे !

स्वामी जी ने नाम दीक्षा प्राप्त करने के लिए लगातार नौ वर्ष कठोर तपस्या की! उसके पश्चात् महायोगी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने सगुण मंत्र **'सतनाम साक्षी'** का उपदेश दिया और कुछ समय पश्चात् **'निर्गुण मंत्र'** की दीक्षा प्रदान की !

स्वामी जी का हरिद्वार गंगा मैया से विशेष प्रेम व लगाव था ! स्वामी जी 'आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज' से आज्ञा लेकर

अधिकतर उत्तराखंड- ऋषीकेश- श्री गंगा जी के पावन तट पर तप-तपस्या, भजन- साधना के लिए जाया करते थे !

स्वामी जी को सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जी के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् सभी संतो ने सन् - १९४२ में द्वितीय गुरु गाद्दी पर विराजमान पर किया ! फिर ३५ वर्षों तक प्रेम प्रकाश मण्डल की सेवा का कार्यभार संभाला!

स्वामी जी का सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज में के प्रति अगाध प्रेम, श्रद्धा- विश्वास था ! उन्हें ही अपना गुरु, इष्ट, भगवान एवं सब कुछ मानते थे ! स्वामी जी सदैव अपने साथ सद्गुरु महाराज जी का चित्र रखते थे और अक्सर कहते थे कि **'सद्गुरु महाराज'** सदैव मेरे साथ हैं!

स्वामी जी **'श्री गुरुदेव जी'** द्वारा बतलाये गए पद चिन्हों पर ही चलते थे ! हमेशा जमीन पर ही सोते थे ! सुबह शीघ्र उठकर भजन-साधना में लग जाते थे !

स्वामी जी का सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जी में इतना प्रेम, श्रद्धा-विश्वास था कि- उनका ही ध्यान-चिंतन करते-करते वे उनका ही स्वरूप बन गये ! इसलिए अक्सर **'श्री अमरापुर स्थान-जयपुर'** की प्रतिमाओं में पता ही नहीं चलता कि- कौन सी प्रतिमा 'आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज' की और कौन सी स्वामी जी की है !

स्वामी जी को कभी भी, आर्थिक मुश्किल आती थी तो किसी से न कहकर, अथवा अन्य कोई भी समस्या आने पर वे अपने **'श्री गुरूदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** के समक्ष रखते थे ! फिर उनकी कृपा से सब कार्य पूर्ण हो जाते थे!

स्वामी जी ने अपने जीवनकाल में श्री गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का जीवन चरित्र, राजा शिखरध्वज- रानी चूड़ाला, साक्षी दर्शन, वामन-बलि इत्यादि ग्रन्थों की रचना की और प्रतिदिन अमृत वचन लिखा ! जो अभी **'सर्वानन्द संदेश'** के नाम से उपलब्ध है !

स्वामी जी प्रायः कहा करते थे कि अगर भोजन करना ही हैं तो समय पर करो, यदि सत्संग, आराम या अन्य कार्य करने हैं तो समय पर ही करना चाहिए ! स्वामी जी स्वयं समय के बड़े पाबंद थे !

स्वामी जी माताओं को जल्दी घर जाने की आज्ञा देते थे और कहते थे - दूर से ही मनोमय प्रणाम करो ! माताओं को काले वस्त्र कभी भी नही पहनने चाहिए !

स्वामी जी ने देश-विदेश की यात्रा करने पर भी अपने सादे जीवन को नहीं बदला ! सुई-धागा भी अपने साथ ही रखते थे ! चोला फट जाता तो स्वयं ही सिल लिया करते थे ! किसी से नही कहते थे !

स्वामी जी प्रत्येक शनिवार के दिन उपवास और मौन व्रत रखते थे ! केवल सत्संग के समय ही बोलते थे !

स्वामी जी की अंतिम इच्छा यह थी कि उनके पंच भौतिक देह को माँ गंगा जी में समर्पित किया जाये ! तब श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के सभी संतों ने स्वामी जी के इच्छानुसार तीर्थ नगरी हरिद्वार **'श्री गंगा जी'** में जलसमाधि प्रदान की ! आज वहाँ स्वामी जी का **'स्मृति-स्थल'** बना हुआ है !

स्वामी जी ने **'आचार्य श्री'** की परम्परा को पूर्ण रूप से निभाया! चाहे गुरु मंत्र **'सतनाम साक्षी'** हो, इष्ट उपासना **'भगवान श्री लक्ष्मीनारायण'** हो या फिर **प्रेम प्रकाश आश्रम** का नाम हो !

एक भी आश्रम अपने नाम से नही बनवाया ! ये उनकी पूर्ण गुरु भक्ति थी !

स्वामी जी ने अपने जीवन काल मे अपना जन्मदिन कभी भी नही मनाया ! हमेशा कहते थे कि हमें **'आचार्य श्री'** का ही जन्मोत्सव बड़े भक्ति भाव के साथ मनाना चाहिए !

स्वामी जी आचार्य श्री के द्वारा बतलाये गए मार्ग पर चलकर हाथों की रेखा दिखाना, काले धागे, ताबीज आदि के लिए मना करते थे - बोलते थे पहनना है तो 'रामनाम रूपी धागा' पहनों ! उसी से तुम्हारा कल्याण होगा !

देश- विभाजन के पश्चात् स्वामी जी ने **'श्री अमरापुर दरबार'** का निर्माण जयपुर में करवाया ! फिर सभी संतो के साथ मिलकर स्वयं रेत, बजरी, ईट उठाकर आदि सेवा कार्य किया करते थे !

स्वामी जी ने 'श्री गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज' की अनुभवी वाणी को संजोकर, संतो के साथ मिलकर **'श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ'** का प्रकाशन करवाया !

स्वामी जी प्रतिदिन **'श्री गुरु महाराज जी'** के समक्ष - हे परम पिता समर्थ बाबा ! सच्चिदानन्दघन ! ये प्रार्थना किया करते थे।

स्वामी जी कहते थे - श्री गुरु महाराज जी सदैव डंडा लेकर यहाँ घूमते है और हमारी रक्षा करते है ! मालिक वो है ! हम तो उनके दास व सेवक है !

स्वामी जी ने अपने जीवन की ८० वर्ष की यात्रा पूरी कर सावन मास, गुरुवार, सिंधी चौथ सन् १९७७ में पारब्रह्म की ज्योति में समा गए !

ऐसे परम वैरागी तपस्वी महापुरुषों को हमारा शत्-शत् नमन!

आचार्य श्री के परम उपासक स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

महापुरुषों की कही बातों व शिक्षाओं को लेखनी में बांधना बेहद कठिन होता है क्योंकि जो वाणी उनके श्रीमुख से निकलती है वह वेद का सूत्र बन जाती है। अगर कोई एक ही सूत्र को खोले तो एक किताब बन जाये।

भारत देश की पावन धरा पर अनेक संतों-महापुरुषों का अवतरण हुआ है, सभी संतों-महापुरुषों ने न केवल भारत वासियों को सच्चा ज्ञान एवं सतत-कर्मों का मार्ग दिखाया है, अपितु दुनिया के समस्त समुदायों को अपनी वाणी से मंत्रमुग्ध कर दिया, जिसका परिणाम है, आज भी देश-दुनिया के समुदाय इस पावन धरा व हमारे ऋषि-मुनियों, संतों- महात्माओं की तपोभूमि को नमन करने नियम से आते रहते हैं।

इन्हीं संत-महापुरुषों की कड़ी में एक शुभाशुभ नाम आता है- त्याग तपस्या की साक्षात् मूर्ति महर्षि योगीराज सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का। जो अनन्त दैवीय गुणों से परिपूर्ण थे। सच्चे गुरुभक्त स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने न केवल, अपने सद्गुरु महाराज, **प्रेम प्रकाश पंथ के बीजक आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** की सेवा की वरन् उनके पावन उपदेशों की यशकीर्ति चहुँ ओर फैलाई एवं अपने सदुपदेशों से करोड़ों लोगों को सत्मार्ग की ओर अग्रसर किया।

महाराजश्री का शुभ अवतरण अविभाजित भारतवर्ष के सिन्धु प्रान्त में हैदराबाद जनपद की हाला तहसील के भिट्टशाह नामक गाँव में सम्वत् १९५४ के मंगलमय आश्विन् मास की शुक्ल चतुर्दशी (सिन्धी असू महीने की बारह तारीख), गुरु का गौरव बढ़ाने वाले पावन दिवस गुरुवार को प्रातःकाल माता ईश्वरी देवी व पिता सेवकराम के आँगन में हुआ. आपके ललाट पर अद्भुत तेज देखकर पिता सेवकराम ने ज्ञानी ब्राह्मणों को बुलवाया एवं आपके भविष्य के सम्बन्ध में पूछा! सभी वेदज्ञ पुरोहितों ने आपके तेजस्वी ललाट की दिव्य चमक देखकर भविष्यवाणी की कि **"यह बालक बड़ा होकर महान संत बनेगा"** नामकरण संस्कार उत्सव में आपका नाम **'सीरु'(सर्वानन्द)** रखा गया ! सिन्ध प्रदेश के सुविख्यात महायोगी तपस्वी संत सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज आपके मामा लगते थे, नामकरण संस्कार में वे भी सम्मिलित थे। आपने जब बालक सर्वानन्द के मस्तक पर हाथ फेरकर आशीर्वाद दिया तो बालक सर्वानन्द के चारों ओर विचित्र आभा मण्डल फैल गया, चेहरा ईश्वरीय शक्ति की दिव्य धारा से ओत प्रोत सा हो गया। माता-पिता के घर प्रतिदिन संध्याकालीन सत्संग व आरती होती थी। इससे बालक सर्वानन्द को बाल्यावस्था से ही सत्संगीय वातावरण सहज में ही प्राप्त हुआ! जैसे-जैसे आप बड़े होते गये नित्य प्रार्थना व भजन माता-पिता व संगत के साथ गाने लगे! धीरे-धीरे आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ता गया! किशोरावस्था के समय आपने संसार के मायाजाल से छुटकारा पाने का दृढ़ निश्चय ही कर लिया एवं माता-पिता की आज्ञा से संत शिरोमणि सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की चरण-शरण में गये! आचार्यश्री ने आपकी सेवा श्रद्धा ईश्वरीय लगन देखकर आपको

शिष्य रूप में स्वीकार किया. आपने अपने सद्गुरु महाराज की सेवा सुश्रूषा एकनिष्ठ होकर श्रद्धाभाव से की. आचार्यश्री आपकी सेवा निष्ठा से बहुत प्रसन्न रहते थे! आपको संत मण्डली के साथ रटन पर भी ले जाते थे. आचार्यश्री के अमरापुर धाम गमन के बाद संत मण्डल द्वारा श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की बागडोर आपको सौंपी गई!

देश विभाजन की आशंका के चलते एक बार जब आचार्यश्री के साथ जयपुर में संत मण्डली का आगमन हुआ तो यहाँ पर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को **'श्री अमरापुर दरबार'** की स्थापना के लिये गुरुदेव की रुचि संकेत हुआ! कालान्तर में देश विभाजन की त्रासदी के बाद आपके द्वारा जयपुर में आचार्यश्री के पावन मंदिर श्री अमरापुर दरबार (डिब्) की स्थापना आचार्यश्री के संकल्प को ध्यान में रखते हुए उसी स्थान पर की गई! जहाँ आज हम सब लाखों भक्तों के साथ नित्य शीश झुकाकर उस परम पावन धरा **'समाधि स्थल'** को नमन-वन्दन करके मनोरथ पाते हैं!

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज जो शिक्षा सत्संग प्रवचनों में दिया करते थे, पहले स्वयं उस पर अमल करते थे! आपकी रहनी-सहनी बिल्कुल सादगी से भरी थी, आप अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाते थे कि सत्संग कल्पवृक्ष के समान है, जैसे कल्पवृक्ष की पूजा करने से मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं, वैसे ही सत्संग से जीव को धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष चारों पदार्थ आसानी से मिल सकते हैं!

मोक्ष-ज्ञान व भक्ति विषय पर **सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज** का कथन है कि कोई भी मनुष्य चाहे वह ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ अथवा संन्यासी क्यों न हो, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र किसी

भी वर्ण का क्यों न हो, वह प्रयास करे तो गुरु कृपा से आत्म ज्ञान को पाकर मोक्ष प्राप्त कर सकता है। ज्ञान व भक्ति का लक्ष्य परमात्मा है, परमात्मा का सम्बन्ध किसी जात- पात से नहीं है, जो भी सत्य धर्म का पालन करते हुए भगवान का भजन-स्तुति करेगा वह मोक्ष निश्चित पायेगा।

अपने सद्गुरु महाराज जी की दी हुई विद्या के बल पर आपने मन और इन्द्रियों को वश में रखकर शान्तचित्त रहकर, सभी दोषों से रहित होकर, परम्परा से प्राप्त गुरुमंत्र **'सत्नाम साक्षी'** और **प्रेम प्रकाश पंथ** के नियमों का ज्यों का त्यों पालन किया! आपने सदैव आचार्यश्री को ही ईश्वरीय रूप में व्यापक माना, अपने सत्संग प्रवचनों में आप कहते हैं कि ज्ञान, वैराग्य, मोक्ष आदि सब कुछ गुरुदेव की कृपा से ही मिल सकते हैं! **जो अंधकार से निकालकर प्रकाश में ले जावे, उसे 'गुरु' कहते हैं**! सत्गुरु की आज्ञाओं के अनुकूल आचरण करना ही गुरुभक्ति कहलाती है एवं 'गुरु-भक्ति' को ही 'हरि-भक्ति' कहते हैं! आपने न केवल प्रेम प्रकाश पंथ की अपितु आचार्यश्री की आभा व यशकीर्ति को चहुँ ओर फैलाया! इसी के साथ देश-विदेश के अनेक नगरों में प्रेम प्रकाश आश्रमों की स्थापना की! आपकी तपोस्थली जयपुर व हरिद्वार के भव्य आश्रमों के साथ-साथ देश दुनिया में वर्तमान में संचालित आश्रम, जो प्रेम प्रकाश पंथ की आत्मज्ञान रूपी खुशबू से सभी को आनन्दित करके उनका पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं!

आप सदैव सत्संग करने से पूर्व जिज्ञासुओं को सावधान व मन को एकाग्र करने को प्रेरित करते थे एवं सत्संग वर्खा के उपरांत **सत्नाम साक्षी** व **साक्षी शिवोऽम्** की धुनि लगाकर सत्संग को

विराम देते थे।

'यथा नाम तथा गुण' की उक्ति को अपने नाम के साथ चरितार्थ किया. **सर्व+आनन्द अर्थात् सभी को आनन्द देने वाले थे सद्गुरु सर्वानन्द !** देश विभाजन के पश्चात् आपने श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का मुख्यालय जयपुर में **श्री अमरापुर स्थान** के नाम से स्थापित किया। यात्रा रटन के बाद आप अधिकांश समय जयपुर श्री गुरु दरबार (डिब्बा) व हरिद्वार आश्रम पर ही निवास करते थे।

भगवद् स्वरूप महायोगी आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के परम उपासक त्यागी, तपस्वी, महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के श्रीचरणों में कोटि-कोटि नमन-वन्दन !

गुरु के प्रति निष्ठा एवं पक्का विश्वास

एक गुरू की शरण ली, एक गुरू का आधार।
एक भाव से भक्ति कर, हो गये भव से पार।।

महापुरुषों के पास अपनी निजी शक्तियाँ ही बहुत होती हैं ! उनको दूसरों से सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती... महर्षि अगस्त्य जी बिना किसी की सहायता के अकेले ही सारे समुद्र के जल को एक ही घूँट में पी गये... अकेले कपिलदेव मुनि के दृष्टिपात से महाराजा सगर के साठ हजार पुत्र जलकर राख हो गये... ऐसी अनेक शक्तियाँ योगियों के पास होती हैं! उनके लिये दुनिया में कोई भी कार्य कठिन नहीं है! गीता के अनुसार जो योगी भगवान के भक्त हैं, वे अपनी शक्तियाँ कभी प्रकट नहीं करते हैं! उनकी शक्तियाँ दुनिया के लोगों को दिखलाने के लिये नहीं होती हैं! साधारण लोगों को आश्चर्य में डालने या उनको डराने धमकाने, अपने वश में करने के लिये नहीं होती हैं... न ही अपनी प्रभुता बढ़ाने या प्रतिष्ठा ज़माने के लिये भी महापुरुष अपनी शक्तियों का प्रयोग नहीं करते हैं !

अतः वीतराग तपस्वी **सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज** के अपने जीवन में जितनी भी कठिन परिस्थितियाँ आयीं पर उन्होंने अपना धर्म नहीं छोड़ा न कभी किसी के आगे हाथ फैलाया! उन्हें तो अपने **श्री गुरुदेव भगवान महायोगी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** के ऊपर पूर्ण दृढ़ विश्वास था. फिर भी कभी-कभी आश्रम के

कार्यभार को देखते हुए थोड़े घबरा जाते थे. ऐसे ही एक समय मन ही मन सोच रहे थे.....

एक तरफ दरबार का कर्जा चुकाना था तो दूसरी तरफ गौशाला थी, सौ सवा सौ लोगों के लिये प्रतिदिन भोजन भी बनता था, दरबार के और भी सेवा कार्य चलते थे. यह सब देखकर स्वामीजी घबरा गये, सोचने लगे, ये सारे कार्य मुझसे कैसे संभाले जायेंगे! गुरू महाराज जी को मालूम थी कि किसी से भी पाई पैसा माँगना नहीं है, माँगने की इच्छा भी मन में नहीं लानी है, न किसी को सीधी या किसी के द्वारा दान देने की प्रेरणा देनी है. क्योंकि सनातन धर्म माँगना नहीं सिखाता है!

माँगन मरन समान है, मत को माँगे भीख।
माँगन से मरना भला, यह सत्गुरु की सीख।।

रहिमन वे नर मर चुके, जो कहं माँगन जाहिं।
तिन ते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं।।

तुलसी कर पर कर करो, कर पर कर न करो।
जा दिन कर पर कर करो, ता दिन मरन करो।।

इस विषय पर संतों महात्माओं ने बहुत कुछ कहा है. माँगने का, भले ही कोई युग धर्म बताकर और दलीलें देकर माँगने का समर्थन करें, परन्तु संत महात्मा युग धर्म के पीछे नहीं चलते, वे तो सत्य सनातन धर्म का अनुसरण करते हैं!

गुरु दरबार के कार्य-भार के विषय में सोचते हुए स्वामी सर्वानन्द जी महाराज लेट (सो) गये और उनको नींद आ गयी. अर्धरात्रि को स्वामी जी उठे और कुटिया से बाहर निकले, इधर-उधर

घूमकर फिर कुटिया में जाने लगे तो किसी ने आवाज दी- **सर्वानन्द**! ओ ! **सर्वानन्द**..... आवाज पहचान कर स्वामी जी उधर गये जहाँ से आवाज आयी थी.... कंडी नामक पेड़, जिसके नीचे **परम पूज्य श्री गुरुदेव भगवान सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज** पहले पहले आकर बैठे थे ! वहाँ पहुँचकर आश्चर्य में पड़ गये, क्या देखा ! श्री गुरू महाराज जी खड़े हैं, लाठी हाथ में है और मुस्करा रहे हैं ! स्वामी जी पहले डर गये, पर फिर संभल कर श्री चरणों में साष्टाँग दण्डवत् प्रणाम किया ! प्रणाम कर ज्योंही खड़े हुए तो अपने को कुटिया में सोया हुआ अनुभव किया ! फिर वही आवाज आयी- सर्वानन्द ! क्या सोच रहे हो, चिन्ता छोड़कर सेवा में लग जाओ ! आप किसी बात की चिन्ता न करें.... आवाज सुनकर स्वामी जी सहसा जाग पड़े, उठकर लाईट जलायी, देखा तो कुटिया का दरवाजा अन्दर से बंद है, अभी-अभी तो मैं बाहर निकला था, जो कुछ देखा या सुना वह स्वप्न था, या प्रत्यक्ष था?

इस प्रकार स्वामी जी को कई बार गुरू महाराज जी के दर्शन हुए। तब से स्वामी सर्वानन्द जी महाराज कहा करते थे कि गुरुदेव भगवान लाठी लेकर पूरे दरबार साहब में घूम रहे हैं, हम सबकी देखभाल कर रहे हैं ! अब हमें कोई चिन्ता नहीं है ! हम तो उनके दास व सेवक है ! तब से स्वामी जी शोक, मोह, भय, भ्रम से रहित होकर सेवा में लग गये ! इसी प्रकार स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने गुरू महाराज जी के कई बार दर्शन किये थे !

गुरु भक्त- गुरु निष्ठ महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को कोटि-कोटि वन्दन !

स्वप्न में किये-दुःख दर्द दूर ...

एक बार स्वामी सर्वानन्द जी महाराज रावलपिंडी में 'देवी द्वारें' किसी स्थान में ठहरें हुए थे ! प्रतिदिन वहाँ भजन- सत्संग का कार्यक्रम चल रहा था ! वहाँ के एक प्रेमी लाला हरीचन्द की लड़की का जिस लड़के से विवाह होने वाला था ! उसे जलंधर की बिमारी हो गयी थी ! वे लोग बारात लेकर आ गए थे ! लाला हरीचन्द स्वामी जी के पास आये और सारी बात कहकर प्रार्थना करने लगे- 'हे गुरूदेव ! अब क्या करें?' स्वामी जी सारी बात सुनकर उनसे कहने लगे- आप घबराये नहीं ! चिंता नही करो ! हम अभी जाकर अपने '**श्री गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज**' से पुछकर बताते है ! एक घंटे बाद आप हमसे आकर पूछना ! ऐसा कहकर स्वामी जी ने अपनी कुटिया का द्वार बंद कर दिया और लाला हरीचन्द कुटिया के बाहर ही बैठे रहे !

कुछ देर बाद स्वामी जी बाहर आए और कहा - '**श्री गुरु महाराज जी**' ने विवाह के लिए आज्ञा दी हैं ! आप जाकर विवाह की तैयारी करें ! भगवान सब अच्छा करेंगे ! तुम किसी बात की चिंता नहीं करो ! आज्ञा पाकर लाला हरीचन्द ने जाकर विवाह कार्य सम्पन्न किया! दूसरे दिन सवेरे लाला हरीचन्द अपनी लड़की और दामाद के साथ प्रसाद लेकर स्वामी जी के पास आए ! लाला हरीचन्द का दामाद कहने लगा - स्वामी जी ! कल रात तबियत ठीक न होने के कारण मुझे नींद तो नहीं आ रही सकी, पर फिर भी लेटा हुआ था ! न जाने कैसे मेरी आँख लग गई और मैंने सपने में देखा कि एक गेरू रंग का लम्बा चोला

पहने हुए ! एक हाथ में लाठी और दूसरे हाथ में कमंडल लिए हुए सफेद दाढ़ी वाले एक सिद्ध संत- महात्मा- बाबा जी- जिनका चेहरा तेज से चमक रहा था ! मेरे सामने खड़े हैं ! उन्होंने मुझे लाठी छूकर जगाया और पूछा- क्या हुआ है बेटा... ? तुम्हें कुछ भी नहीं हैं, तुम ठीक हो। फिर अपने कमंडल में से जल निकाल कर मेरे मुँह में डाला और शरीर पर भी छिड़का व 'सतनाम साक्षी' कहा ! कुछ देर में मुझे महसूस होने लगा - जैसे मेरी बीमारी ठीक हो गई है ! पीड़ा कम हो गयी है ! मैंने ज्यों ही प्रणाम करना चाहा तो मेरी आँख खुल गई ! मैंने उठने के बाद देखा कि - मेरे शरीर की पीड़ा बहुत कम हो गयी और अब मैं बिल्कुल ठीक हो गया हूँ ! कोई बीमारी नहीं है ! पता नही कैसे ये सब ठीक हो गया....? !

तब लाला हरीचन्द परिवार सहित स्वामी जी की महिमा का गुणगान और स्तुति करने लगे !

यह देखकर स्वामी जी ने उन्हें समझाते हुए कहा कि- लाला जी! आप जल्दी में भूल गये ! यह सब महिमा हमारे **'श्री गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** की हैं ! उन्होंने ही तुम्हारे दुःख दर्द दूर किये है ! वे हम सबके रखवाले है ! सभी के दुःखो को हर लेते है ! वे ही स्तुति के योग्य है ! आप हमारी स्तुति न करके **'श्री गुरुदेव जी'** की करे!

श्री गुरु महाराज जी तो अति दयालु-कृपालु है ! उन्हें कभी नही भूलना चाहिए ! जो उनमें पक्का विश्वास रखता है ! उसके सर्व मनोरथ सिद्ध हो जाते है !

शत् - शत् नमन् ! कोटि-कोटि नमन् !

वचन पालन व बालक की रक्षा करना

एक बार सतगुरु सर्वानन्द जी महाराज को श्रीलंका की यात्रा के दौरान एक शहर से दूसरे शहर किसी कार्यक्रम में जरूरी जाना था! स्वामी जी व संत मण्डली गाड़ी पर पहुँचने के लिए स्टेशन पर पहुँच गए थे !

उधर जिस घर में ठहरें थे ! उस घर में एक छोटा बालक घर की छत से नीचे गिर गया था ! बच्चे की हालत नाजुक थी ! घर के सदस्यों ने स्वामी जी से प्रार्थना कि इस हालत में हमें छोड़कर नहीं जावें ! ऐसा सुनकर स्वामी जी दो मिनिट के लिए मौन हो गये ! फिर थोड़ी दूर अकेले एकान्त स्थान पर चले आए, वहाँ खड़े होकर लाठी की मूठ पर माथा रखकर '**श्री गुरुदेव**' के ध्यान में लीन हो गये ! थोड़ी देर बाद उत्तर मिला ! **संत सर्वानन्द** ! आप यात्रा पर जाओ ! क्योंकि आपने वहाँ भी प्रेमी को वचन दिया है ! वचन की पालना करना जरूरी है ! पूज्य स्वामी जी वापस उस स्थान पर आए ! जहां वे सब प्रेमी खड़े थे ! तब आकर स्वामी जी ने प्रेमियों को कहा कि- हमने उधर भी वचन दिया है वहाँ अवश्य जाना पड़ेगा ! पुनः आपके पास उधर भी नहीं चल सकेंगे ! अगर वापस चलेंगे तो वहाँ प्रेमियों को दिया हुआ वचन भंग होगा ! आप किसी प्रकार की चिन्ता नही करो ! '**श्री गुरुदेव भगवान**' सब भली करेंगे और आपके पुत्र की रक्षा करेंगे !

प्रेमी कुछ बोल नहीं सके ! लेकिन मन में शंका रह गई कि- यदि स्वामी जी तीन-चार दिन ओर रह जाते तो अच्छा होता ! श्री गुरुदेव की आज्ञा अनुसार स्वामी जी ने अपनी यात्रा जारी रखी ! समय से दूसरे शहर कार्यक्रम में पहुँच गए ! वहाँ के भक्त- प्रेमी भी स्वामी जी के दर्शन कर बड़े प्रसन्न हुए ! दो दिन के बाद शाम के समय वही बच्चा दौड़ता हुआ स्वामी जी के सत्संग में आया ! सभी संत- प्रेमी उस बच्चे को देखकर आश्चर्य चकित रह गए ! पूछने पर बच्चे ने बताया कि- 'मैं तो बेहोश हो गया था ! किसी बात का होश नही था ! परन्तु एकाएक स्वामी जी ने आकर मुझे अपने हाथ से उठाया और कहा - अरे बेटा ! तुम तो ठीक हो ! तुम्हे तो कुछ भी नही हुआ है ! तुम स्वस्थ हो ! इतना सुनते ही मैने उठकर देखा तो मैं एकदम स्वस्थ हो गया हूँ !' अब मुझे कुछ भी नहीं हैं, ऐसी लीला देखकर सभी प्रेमी प्रसन्नचित हो गये !

इस प्रकार पूज्य स्वामी जी ने वचन की पालना की और बालक की रक्षा भी की !

ऐसे भक्तों के पालनहार श्री गुरुदेव जी को हमारा शत्-शत् नमन ! कोटि - कोटि वन्दन् !

परम त्यागी वैरागी संत महापुरुष

तरुवर सरवर संतजन, चौथा बरसे मेह !

परमार्थ के कारने, चारों धारी देह !!

एक समय की बात है ! सतगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज जयपुर **श्री अमरापुर स्थान** से प्रतिदिन की भांति पैदल सैर करने के लिए निकले थे ! उनके साथ कुछ और भी प्रेमी - भक्त थे !

कुछ दूर जाने पर एक फकीर स्वामी जी पास आकर खड़ा हो गया और कहा - हे दयालु ! महात्मा जी ! मेरे पास पहनने के लिए कपड़े नहीं है ! मेरी मदद कीजिए ! कृपया आप अपने कपड़े मुझे दे दीजिए ! मुझे अभी बहुत जरूरत है ! स्वामी जी ने कहा - अभी ठहरों ! हम आश्रम से कपड़े मंगाकर आपको देते हैं ! उस फकीर ने कहा - नही स्वामी जी ! मुझे अभी ही कपड़े चाहिए ! मुझे जल्दी जाना है ! इस पर स्वामी जी ने बिना कुछ सोचे या देखे- तुरन्त ही अपने पहने हुए कपड़े (चोला) उतारकर दे दिया ! ऐसा दृश्य देखकर सब प्रेमियों को बड़ा आश्चर्य हुआ ! कैसे अद्‌भुत फक्कड़ महापुरुष है..???

स्वामी जी बिना कुछ कहे कुछ समय तक ऐसे ही ध्यान मुद्रा में एक लंगोटी में खड़े रहे ! तब एक प्रेमी भागकर आश्रम से स्वामी

जी के वस्त्र ले आया और फिर स्वामी जी ने वस्त्र धारण किये ! इतना बड़ा त्याग हर कोई संत - महात्मा नही कर सकता ! इस जहान में ऐसे गुण किसी विरले ही संत में मिल सकते है !

ऐसे ही स्वामी जी के पास जो भी कोई गरीब, दीन, दुःखी व्यक्ति आते थे ! वह कभी निराश होकर नहीं जाते थे ! स्वामी जी उनकी सभी इच्छाएँ अवश्य पूरी किया करते थे !

धन्य-धन्य हैं ऐसे महापुरुष ! कोटि- कोटि वन्दन....

गुरु सेवा व गुरु भक्ति

एक बार सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मेले के बाद किसी दूसरे शहर यात्रा पर जा रहे थे। तब स्वामी सर्वानन्द जी और स्वामी गुरूमुखदास जी को बुलाकर कहने लगे कि - हम दो-चार दिनों के लिए यात्रा पर जा रहे हैं ! आप पीछे खेतो की देखभाल अच्छी तरह से करना! आज्ञा देकर सतगुरु महाराज जी चले गये ! इधर स्वामी सर्वानन्द जी व स्वामी गुरूमुखदास जी आज्ञानुसार खेतों पर आ गए ! यद्यपि खेत घर के पास ही थे ! फिर भी 'श्री गुरुदेव जी' की आज्ञा शिरोधार्य कर घर न जाकर रात-दिन वहाँ खेतों की सार-संभाल करने लगे ! भूख लगने पर जंगली फल खा लेते थे ! सर्दी लगने पर घास जला लेते थे और रात को भूसे में सो जाते थे ! क्योंकि घर जाने के लिए सतगुरु महाराज कहकर नहीं गए थे ! आप समझ सकते हैं कि कड़ाके की सर्दी में रात-दिन खेतों पर रहना... वहीं के जंगली फल खाकर रहना.. कितनी कठोर तपस्या हैं !

एक सप्ताह बाद यात्रा करके **सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज आश्रम (दरबार)** पर वापस आए ! फिर घर पर पहुँचकर **सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** ने **स्वामी सर्वानन्द जी** व **स्वामी गुरूमुखदास जी** को खेतों से बुला लिया !

'श्री गुरुदेव भगवान' के पास पहुँचकर दोनों ने दण्डवत प्रणाम कर चरणों में शीश झुकाया ! सतगुरु महाराज जी ने दोनों को

पास बिठाकर खेती के विषय में पूछा - स्वामी जी ने पूरा कुशल समाचार बतलाया ! स्वामी गुरूमुखदास जी अवधूत तथा दरवेश महापुरुष थे ! अपने सहज स्वभाव के कारण वे बीच में ही कहने लगे कि- गुरु जी ! आप हमें भोजन और बिस्तर के लिए कुछ भी नहीं कहकर गये थे ! इसलिए हम जंगली फल खाकर रात को भूसे में ही सो जाते थे ! स्वामी गुरूमुखदास जी से यह सुनकर सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज बड़े प्रसन्न हुए ! दोनों को गले लगाकर बहुत लाड़-प्यार करने लगे ! सतगुरु महाराज जी से सहज ही आशीर्वाद और स्नेह पाकर दोनों अपने आपको बड़भागी समझने लगे ! तो ऐसी होती है गुरु सेवा और भक्ति !

ऐसे गुरू के परम भक्त महापुरुषों को शत-शत नमन..।

स्वामी जी की त्याग - वैरागवृती

एक बार स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सन् १९७५ न्यूयार्क शहर में एक प्रेमी के कार के शोरूम पर चरण घुमाने गये थे ! उस प्रेमी ने स्वामी जी से विनम्र प्रार्थना करते हुए कहा- गुरूदेव ! मेरी इच्छा है कि मैं आपको एक कार भेंट करूँ ! आप जिस गाड़ी पर हाथ रखे ! वह गाड़ी मैं आपको भेंट कर दूँगा !

स्वामी जी ने पहले तो स्पष्ट मना कर दिया ! परन्तु उस प्रेमी के बार-बार आग्रह करने पर स्वामी जी ने उससे कहा - बेटा ! यहाँ तो तुम कार हमें भेंट कर दोगे, पर कार को भारत कौन ले जाएगा ! वह प्रेमी स्वामी जी की रहस्यमयी बातों को न समझा अर्थात् स्वामी जी को कार की आवश्यकता नहीं थी और फिर कहने लगा ! जयपुर तक पहुँचाने की ड्यूटी-किराया वगैरे सब खर्च मैं वहन करूँगा ! स्वामी जी ने पूछा- पेट्रोल कौन भराएगा..? उस प्रेमी ने उत्तर देते हुए कहा - वह खर्चा भी मेरी तरफ से आप चाहे जितना उपयोग करे ! फिर स्वामी जी ने कहा-गाड़ी चलाएगा कौन और टूट-फूट हो गई फिर ? वह प्रेमी कहने लगा कि - चालक का खर्चा और अन्य सब खर्चे भी मैं वहन करूँगा ! आप केवल गाड़ी (कार) की भेंट स्वीकार करें !

इतना सब कुछ करके देने को वो भक्त तैयार था किंतु स्वामी जी ने फिर भी मना कर दिया ! वह प्रेमी आश्चर्य में पड़ गया और हाथ जोड़कर कहने लगा- हे प्रभु ! इतना करने के बाद भी आप क्यों मेरी

भेंट को स्वीकार नहीं कर रहे ? तब स्वामी जी ने कहा- बेटा ! हम कार क्या करेंगे ? हम तो सैलानी है ! ऐसे ही सफर करते रहते है ! उसे स्वीकार करके और आपको तकलीफ दे! क्या लाभ! इतना सुनकर वह प्रेमी और सब आश्चर्य चकित हो गये ! क्योंकि उस समय कार की कीमत भारत में तीन लाख रुपये थी ! देखो- स्वामी जी कितने न निर्मोही थे कि संसार के किसी भी वस्तु की इच्छा ही नहीं ! इन सब बातों से परे अपने श्री गुरुदेव की भक्ति में सदैव रमे रहते थे !

ऐसे संत महापुरुष दुर्लभ ही होते है जिन्हें किसी भी वस्तु की आवश्यकता न हो और न किसी में मोह - ममता हो, धन्य-धन्य है ऐसे संत-महापुरुष।

शत - शत नमन ! कोटि- कोटि वन्दन..

श्री गुरुदेव के अनन्त रुप

एक बार सतगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज- श्री प्रेम प्रकाश आश्रम- कल्याण (उल्हास नगर) में स्वामी शांति प्रकाश जी के पास गये! वाणी के कार्य हेतु स्वामी जी कल्याण में एक माह तक रहे ! वहाँ स्वामी जी ने प्रेम प्रकाश मण्डल की ओर से भण्डारा करवाने का निश्चय किया ! भण्डारे का निमन्त्रण सभी साधु-संतों-प्रेमियों को दे दिया गया ! भण्डारे से कुछ दिन पूर्व सामग्री लाने हेतु स्वामी जी ने आश्रम के कोठारी लीलाराम को पैसे दिये, किन्तु लीलाराम ने कहा- स्वामी जी ! मैं स्वामी शांति प्रकाश जी की आज्ञा के बिना आपसे पैसे नहीं ले सकता ! जब सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने स्वामी शांति प्रकाश जी को भण्डारे के लिए कहा तो उन्होंने कहा - भण्डारा हम करवायेंगे ! स्वामी जी ने बहुत कहा - किन्तु वे नहीं माने ! एक ओर स्वामी जी कल्याण में एक माह तक रहे तथा सभी संतों के निमंत्रण को स्वीकार किया था ! इस हेतु वे स्वयं की ओर से भण्डारा करवाना चाहते थे ! दूसरी ओर स्वामी शांति प्रकाश जी अपनी ओर से भण्डारा करवाना चाहते थे ! स्वामी जी थोड़ी दुविधा में पड़ गये कि - अब क्या किया जाए ? संतों को निमंत्रण भी दे चुके हैं ! प्रेम प्रकाश मण्डल में किसी भी साधु को मांगने की आज्ञा नहीं है ! स्वामी जी संकल्प कर चुके थे !

स्वामी जी को श्री गुरुदेव स्वामी टेऊँराम जी महाराज पर पक्का अटल विश्वास था ! प्रभात वेला में स्वामी जी ने **'श्री गुरु महाराज जी'** से प्रार्थना की और कहा- हे श्री गुरु महाराज ! आप तो अन्तर्यामी है !

सबकी पालना करते है ! अब आप इस दास का भी मनोरथ पूरा करें ! आप को ही सब कुछ करना है ! स्वामी जी विचार करने लगे दो दिन बाद भण्डारा है ! कल सामग्री मंगवानी हैं ! देखो अब यहाँ श्री गुरुदेव भगवान कौनसी लीला करते है ! उसी दिन रात्रि को आठ बजे स्वामी जी के पास एक प्रेमी द्वारकादास बैठा था ! इतने में एक व्यक्ति वहाँ आया तथा स्वामी जी से कहा- हमने सुना है कल आप भण्डारा करवा रहे हैं ! स्वामी जी ने कहा-विचार तो हैं ! उस व्यक्ति ने स्वामी जी को एक लिफाफा दिया और कहा- स्वामी जी ! कल भण्डारा मेरी ओर से करवा देना ! स्वामी जी ने पूछा- आप कहाँ रहते हैं...? उसने कहा - मैं घूमता रहता हूँ ! अभी बम्बई में हूँ ! स्वामी जी ने कहा - आप कल भण्डारे में आयेंगे..? उस व्यक्ति ने कहा- आप हमारा इन्तजार न करे ! हम आयें या नहीं आयें ! आप भण्डारा करवा देना ! स्वामी जी ने कहा- अच्छा ! हम कुछ दिन बाद बम्बई आयेंगे आप वहाँ मिलेंगे..? आपका नाम क्या है ? उसने कहा- मेरा नाम धर्मदास है ! हम आपको पुनः मिलें न भी मिलें ! पता नहीं ! इतना कहकर वो व्यक्ति वहाँ से चला गया ! जब स्वामी जी ने उस लिफाफे को खोला तो उसमें ढ़ाई सौ रुपये थे !

स्वामी जी ने प्रेमियों से कहाँ - आप जानते हैं ये व्यक्ति कौन था..? ये हमारे सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज थे ! जो किसी सेठ का रूप बनाकर हमारे संकल्प को पूरा करने के लिये आये थे और स्वामी जी ने उन्हें पहचान भी लिया था ! सिर्फ लीला देख रहे थे ! कैसे-कैसे रुप में श्री गुरुदेव आकर सेवक का भाव रखते थे। ऐसी थी स्वामी जी गुरु निष्ठा व गुरु भक्ति ! हमारा भी गुरु के प्रति ऐसी निष्ठा व विश्वास होना चाहिए ! उससे सर्व मनोरथ सिद्ध हो जाते है !

!! ऐसे गुरु भक्त को शत शत नमन..! कोटि कोटि वन्दन !!

आँखों देखा सच

यह बात सन् १९७४ के चेत्र मेले जयपुर की हैं ! मेले के पहले दिन सत्संग के बाद ध्वजावन्दन हो रहा था ! भीड़ अत्याधिक थी कि एकाएक धका-मुक्की में एक माता जी उस भीड़ के पैरों तले आ गई ! उनको काफी चोट आयीं व बेहोश हो चुकी थी ! लहू-लुहान हालत में माता नीचे गिरी पड़ी थी ! जयपुर के प्रेमियों ने पूछ-ताछ कर पता लगा लिया कि-यह माता इन्दौर वाले प्रेमियों के साथ आई है ! उसी समय तुरन्त डाक्टर को बुलवाया गया तो डाक्टर ने जवाब दे दिया कि- इनकी हालत बहुत गम्भीर है व इनके बचने की उम्मीद नहीं है ! यह सुनकर माता के घर वाले रोने लगे! इन्दौर के मण्डली की एक माता दौड़ती-दौड़ती **सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज** के पास गई व रोने लगी ! स्वामी जी ने कहा- पुत्री ! क्या हुआ हैं ! आप रो रही है.?? तो उन्होंने पूरा समाचार बताकर रोते हुये कहा- डाक्टर ने कहा है वह माता बच नहीं पायेगी ! उन्हीं के साथ स्वामी जी इन्दौर वालों की कुटिया में आये ! वो भी देखकर थोड़ा शान्त हो गये ! फिर स्वामी जी ने '**श्री गुरुदेव**' का चिन्तन करके अपनी चिप्पी में से जल का छींटा मारा और कहा- तुम चिन्ता मत करो ! इसे कुछ नहीं होगा ! श्री गुरु महाराज इनकी रक्षा करेगें ! इस माता को कुछ समय में होश आ जाएगा और हमारे साथ जुलूस में भी चलेगी ! सारी संगत और गुरु महाराज अपने स्थान पर वापस आ गये !

वहाँ बैठे माता के घर वालों ने और अन्य प्रेमियों ने देखा कि-अभी कुछ मिनट ही हुये थे ! स्वामी जी माता के पास आये और कहा- उठो पुत्री ! जुलूस का टाइम हो गया है ! तुम बिल्कुल ठीक हो। इतना कहकर स्वामी जी अंतर्ध्यान हो गये ! एकाएक वह माता उठकर बैठ गई और कहने लगी- अभी तो स्वामी जी मुझे उठा रहे थे ! इतनी जल्दी कहाँ चले गये ! जुलूस में चलने के लिए कह रहे थे ! फिर वह उठकर जुलूस के लिए तैयार होकर शोभायात्रा में सबके साथ चली! जुलूस में हमें डाक्टर भी मिलें ! वे माता को देखकर आश्चर्य में पड़ गये! चकित आँखों से देखते हुए पूछा - आप जुलूस में? अरे! यह तो चमत्कार हैं ! आपका तो बचना मुश्किल था। आपको कोई डाक्टर बचाकर इतनी जल्दी ठीक नहीं कर सकता है ! यह सब गुरू महाराज की शक्ति है जिसने तुम्हारी रक्षा की है ! तुम्हें नया जीवन दान दिया है। धन्य - धन्य है श्री गुरुदेव भगवान।

!! शत् शत् नमन्! कोटि-कोटि नमन!!

स्वामी जी की अनन्य गुरु निष्ठा

एक समय की बात हैं- प्रेम प्रकाश पंथ के प्रवर्तक आचार्य सतगुरु टेऊँराम जी महाराज **'खण्डू'** ग्राम छोड़कर **'टंडो आदम'** शहर के बाहर रेत के टीलों पर अपना स्थान बना रहें हैं ! उड़ती हुई बालू रेत को रोकने के लिए सब सन्त प्रयत्न कर रहे हैं ! स्वामी सर्वानन्द जी महाराज भी अपने श्री गुरुदेव की आज्ञा को शिरोधार्यकर, रेत को रोकने के काम में लगे हुए हैं, न उन्हें धूप की परवाह हैं, न विश्राम करने की कोई इच्छा हैं, न भूख की चिन्ता, न प्यास की ! इसी बीच भोजन खाने की घण्टी बजती है ! शेष सब सन्त कार्य स्थगित कर, भोजन पाने हेतु पधारते हैं किन्तु अनन्य गुरु भक्त सेवक सर्वानन्द तो वहीं खड़े रहे ! मन में दृढ़ संकल्प कर लिया ! काम पूरा होगा या जब श्री गुरुदेव भगवान नहीं बुलाएंगे ! तब तक काम छोड़कर नहीं जायेंगे! ये उनकी अनन्य गुरु भक्ति थी !

अन्तर्यामी सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज- उनकी अखण्ड गुरु भक्ति को जानते थे ! सो स्वयं आकर सर्वानन्द जी को बड़े प्रेम से भोजन के लिए बुला लिया ! ये एक गुरु भक्त की परीक्षा भी थी ! जिसमे स्वामी जी पास हो गए ! ऐसी श्री गुरुदेव भगवान द्वारा अनेक बार परीक्षा ली गयी थी ! स्वामी जी सभी सेवा कार्यों व गुरु भक्ती में सफल हो गए ! ऐसे थे एक निष्ठ सेवक सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज !

शत् शत् नमन् ! कोटि - कोटि नमन !!

यथा नाम तथा गुण

सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को एंकातवास बहुत प्रिय था ! बाहरी रूप से ज्यादातर मौन ही रहते थे ! आपकी दृष्टि मात्र से और सांकेतिक भाषा से ही जिज्ञासु भक्त आनंद विभोर हो जाते थे !

मधुर स्वर और भिन्न-भिन्न प्रकार से हर विषय को समझना ! हर पहलू की छोटी-छोटी बातों पर बारीकी से चिंतन करके, प्रेमी जिज्ञासुओं के लिए कविताबद्ध करके वर्णन करना ! यह उनमें समझाने की अद्भुत शैली व कला थी !

एक बार स्वामी जी के पास कुछ अंग्रेज आये ! महाराज श्री उस वक्त बगीचे में बैठकर प्राकृतिक सौंदर्य का रसपान कर रहे थे और कुछ जिज्ञासु गुरु महाराज के मुखारविंद के माधुर्य का रसपान कर रहे थे ! जैसे कोई भंवरा फूल की खुशबू में मदमस्त होकर उसकी माधुरी का रसास्वादन लेते हैं ! ऐसा ही मधुर और मोहक अमृतमयी मौन सत्संग चल रहा था ! ये प्रेम की अटपटी बातें हैं ! उसे हर कोई नही समझ सकता ! जो सच्चा गुरु प्रेमी और श्रेष्ठ शिष्य होगा वही समझ सकता हैं! **सतगुरु ऐं दास नातो, कहिं विरले गुरुमुख जातो**

वे अंग्रेज गुरु महाराज के तेज से प्रभावित होकर वहीं उनके पास ठिठक कर बठ गये और एकटक गुरु महाराज को निहारने लगे जैसे वे किसी डोरी से बंधे हुए चले आये हों !

थोड़ी देर बाद गुरु महाराज जी ने उनसे कुछ बोलने की आज्ञा

दी ! तब उन्होंने टूटी-फूटी हिन्दी में गुरु महाराज से कुछ आध्यात्मिक प्रश्न किये ! जिनको सुनकर गुरु महाराज बहुत प्रसन्न हुए ! इनके मन मे ज्ञान की बाते सुनने का विवेक जागा है ! उनके ऐसे भाव को देखकर गुरु महाराज ने अपनी मधुर वाणी से बहुत सरल शैली में उन प्रश्नों का उत्तर दिया ! एक-एक बात को अच्छी तरह से समझाया। उस प्रेम भरी अमृतमयी वाणी से भरे उत्तरों को सुनकर उन अंग्रेजों के अंतः स्थल को द्रवित कर दिया और भाव से भरकर उन अंग्रेज बंधुओं ने गुरु महाराज से नाम दान की दीक्षा ली !

फिर कुछ ओर आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर अपने देश चले गए! कुछ समय पश्चात् वे अंग्रेज जयपुर 'श्री अमरापुर स्थान' के दर्शन करने को आये थे।

ऐसे थे सर्व को आनन्द देने वाले सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज !

!! शत् शत् नमन! कोटि-कोटि वन्दन !!

स्वामी सर्वानन्द महिमा-11

सन्तों का त्याग व निर्मानता

यह बात लगभग कई वर्ष पुरानी है ! जब प्रयागराज में कुम्भ मेला लगा था ! कुम्भ मेले में सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का नियम था कि शाम को सत्संग के बाद महाराज जी अपने आठ या दस सेवकों के साथ त्रिवेणी जी का किनारा लेकर घूमने जाते थे ! एक दिन सत्संग के बाद जाते-जाते महाराज जी काफी दूर निकलने के बाद महाराज एक स्थान पर रुक गए! वहाँ किसी महात्मा का वेदान्त विषय पर सत्संग चल रहा था ! तब स्वामी जी ने अपने सभी प्रेमियों से कहा कि- यहां पर बैठकर सभी लोग संतो का सत्संग सुनो ! स्वामी जी अपने मुखारविंद से कहते थे कि- सत्संग का श्रृंगार हैं-शांति और वहीं बात उनकी अपनाई हुई थी ! सबको कहा कि- कोई आगे जाने की कोशिश न करना ! जहां पर जगह खाली है ! वहीं बैठ जाओ ! जितनी जगह पर फर्श बिछे थे, वो सारी जगह भरी हुई थी । महाराज श्री महामण्डलेश्वर होते हुए भी जहाँ फर्शो के पीछे मिट्टी पड़ी हुई थी ! उसी मिट्टी में अपने कंधे से तौलिया उतारकर बिछाया और वहीं बैठ गए ! प्रेमियों ने बहुत कहा- स्वामी जी ! ये आप क्या कर रहे हैं ! आप आगे चले तो संत जी आपको स्वयं बुलाकर मंच पर स्थान देंगे और जिस जगह आप बैठे हुए हैं ! वहाँ तो लोगों के जूते-चप्पल पड़े हैं! परन्तु स्वामी जी ने मुख से कुछ न बोलकर सिर्फ हाथ का इशारा कर सबको चुप करके बैठा दिया और स्वयं भी जूतों के आगे मिट्टी में बैठ गए! यह बात कहने और सुनने में तो

बहुत थोड़ी लगती हैं ! परन्तु यदि हम गहन विचार कर देखें तो यह कितनी बड़ी बात हैं ! इतने बड़े महामण्डलेश्वर होते हुए भी जूतों के आगे और मिट्टी में बैठना क्या कोई सरल कार्य है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि स्वामी जी निर्मानता के साक्षात् मूर्ति थे! ऐसे महापुरुष विरले ही होते है! जिनको मान की इच्छा न हो!

ऐसे तपस्वी महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को शत्-शत् नमन! कोटि - कोटि वन्दन !

स्वामी सर्वानन्द महिमा-12

श्री गुरुदेव मेरे अंग-संग है

त्याग तपस्या की साक्षात मूर्ति सद्गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज थे ! सादगी उनके जीवन का गहना था ! आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज से उनकी ऐसी लगन लगी हुई थी कि जब तक **''आचार्य श्री''** स्वयं शरीर रूप में थे ! तब तक एवं जीवंत रूप के बाद भी गुरु महाराज उन्हें हमेशा अपने अंग-संग ही पाते थे !

एक समय **सद्गुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज** विदेश यात्रा के लिए प्रस्थान कर रहे थे ! तभी किसी प्रेमी ने आकर स्वामी जी से पूछा - स्वामी जी ! आप कितने लोग यात्रा पर जा रहे हैं ! स्वामी जी ने मुस्कुराते हुए कहा - हम **5** लोग यात्रा पर जा रहे हैं ! तभी प्रेमी ने कहा! हमने सुना है कि आप तो **4** लोग यात्रा पर जा रहे हैं ! स्वामी जी ने मुस्कुराते हुए कहा कि **एक सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** व उनका यह दास और **3** अन्य प्रेमी है ! स्वामी जी की यह बात सुनकर सभी संत व भक्त बड़े गद् गद् हुए ! यह होती है गुरु भक्ति ! वह स्वयं को सदैव गुरु महाराज का दास कह कर बुलाते थे ! सदैव **आचार्य सतगुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज** को अपने साथ ही समझते थे !

वे कहते थे श्री गुरुदेव भगवान सदैव मेरे अंग-संग रहते है ! एक क्षण भी मुझसे अलग नहीं होते !

ऐसे गुरु भक्त सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज को शत शत नमन

स्वामी जी की निर्मानता

कई वर्ष पुरानी बात हैं ! सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज यात्रा के दौरान ग्वालियर शहर में पधारें थे ! स्वामी जी वहाँ एक मंजिल ऊपर कमरे में रहते थे !

एक बार **सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज** सत्संग के लिए नीचे उतरकर आ रहे थे ! देखा कि- सीढ़ियों के पास बहुत से प्रेमियों के जूते- चप्पल उलटे सीधे, टेढ़े मेढे पड़े हुए थे ! उनमें से बहुत जूते उल्टे रखे हुए थे ! यह देखकर स्वामी जी ने किसी से न कहकर स्वयं अपनी लाठी से उन चप्पलों को सीधे करके जमा दिये ! देखो- महापुरुषों में कैसे- कैसे विद्यमान गुण होते है ! स्वामी जी में कितनी न निर्मानता थी ! इतने बड़े महन्त होते हुए भी प्रेमियों के जूते-चप्पलों को सीधा करके रखना ! कहना तो सरल होता है पर चलना कठिन होता है ! ये गुण हमें भी संतो से सीखना चाहिए ! इस कथन से हमें यह स्पष्ट पता चलता है कि- स्वामी जी को अपने मान की मन में तनिक भी इच्छा नहीं थी ! अगर कोई निर्मान होना चाहता है तो **सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द महाराज जी** के जीवन से प्रेरणा ले ! ऐसे संत महात्माओं में अनेक गुण होते है। समय-समय पर हमें उनके गुणों का अपने जीवन में अनुसरण करना चाहिए ! जिससे हमारा जीवन सार्थक व कल्याण हो सकें !

धन्य-धन्य ऐसे संत महापुरुष... कोटि-कोटि वन्दन !

यश कीर्ति से परे

सतगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का व्यक्तित्व कैसा निराला था ! जो कोई भी उनकी शरण में आता था तो उसे श्री गुरु महाराज के चरणों में लगाते थे ! वे अपनी पूजा, प्रतिष्ठा और यश-कीर्ति कभी नहीं चाहते थे !

एक बार श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में **सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज** अपनी कुटिया में बैठे हुए थे ! ब्यावर से श्री मुरजमल अपने जवान पुत्र को लेकर स्वामी जी के पास आया ! अपना सारा दुःख सुना कर कहा कि- हे दयालु स्वामी जी ! मेरे इस लड़के घनश्याम की जबान बन्द हो गई है ! बोलना बन्द हो गया है ! कुछ भी बोल नही पा रहा है ! कई दवाईयाँ व उपाय किए हैं, पर कुछ भी लाभ नहीं हुआ है, अब सब तरफ से निराश होकर आपकी शरण में आया हूँ ! आप ही इस बालक पर कृपा करके इसे बोलने की शक्ति प्रदान करे !

मुरजमल की बात सुनकर स्वामी जी ने उसे हिम्मत और भरोसा दिलाते हुए कहा कि-आप चिंता मत करो ! विश्वास रखो ! गुरु महाराज सब अच्छा करेंगे ! अब ऐसा करो ! घनश्याम को लेकर श्री गुरु महाराज के **श्री मन्दिर** एवं **समाधि-स्थल** में जाओ ! वहाँ जाकर घनश्याम से **'सतनाम साक्षी, सतनाम साक्षी...'** कहलवाओं ! जब तक वह न बोले ! तब तक आप बोलते जाना ! विश्वास रखकर

मुरजमल लड़के को लेकर **सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** के **'श्री मन्दिर'** व **'समाधि स्थल'** पर ले आया और स्वामी जी की आज्ञा अनुसार **'सतनाम साक्षी'** दो-तीन बार बोलकर घनश्याम से भी कहलवाने लगा ! यहाँ अब श्री गुरुदेव की ऐसी लीला हुई कि दस-बीस बार बोलने पर घनश्याम की जबान धीरे - धीरे खुलने लगी और वह अब खुश होकर सतनाम साक्षी...**3-4** बार बोलने लगा ! बस फिर क्या था वह गूंगा घनश्याम अच्छी तरह से बोलने लग गया ! यह अद्भुत चमत्कार देखकर सभी बड़े प्रसन्नचित हुए ! श्री गुरुदेव भगवान की जय-जयकार करने लगे ! यह था **'गुरु की कृपा'** व **'सत्नाम साक्षी महामंत्र'** का अद्भुत चमत्कार !

जिसका गुरु में पूर्ण विश्वास व पक्का भरोसा होता है ! उसके सर्व मनोरथ सिद्ध हो जाते है !

ऐसे थे भक्तो के पालनहार सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज!

शत् - शत् नमन ! कोटि-कोटि वन्दन !!

स्वामी जी में शिव रुप का दर्शन

एक बार सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज रामेश्वर की तीर्थ यात्रा पर गए थे ! रामेश्वरम् में एक परम्परा हैं कि- स्नान करने के बाद समुद्र के किनारे से रेत उठाकर उससे भगवान शिव का लिंग बनाकर उसे पानी में बहाया जाता है ! तभी तीर्थ करने का फल मिलता है ! स्वामी जी ने सभी संतों और प्रेमियों को बुलाकर तीर्थ का नियम समझाया - सभी आनन्द-मग्न होकर स्वामी जी की आज्ञा अनुसार रेत के लिंग बनाने लगे ! तभी स्वामी गुरूमुखदास जी, जो स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को भगवान शिव का अवतार मानते थे ! स्वामी जी के पास आए और बोले- स्वामी जी ! मैं रेत का लिंग नहीं बनाऊंगा !

ऐसा सुनकर सभी प्रेमीगण और संतजन स्वामी गुरूमुखदास जी की तरफ उत्सुकता से देखने लगे ! स्वामी गुरूमुखदास जी ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा कि- मैं क्यों लिंग बनाऊँ..? जब साक्षात् शिव जी हमारे साथ में हैं ! तो जल उन्हीं को चढ़ाऊँगा ! यह सुनकर संत और प्रेमीजन सोचने लगे गए ! इधर सतगुरु सर्वानन्द जी महाराज शांतचित होकर स्वामी गुरूमुखदास जी की तरफ देखने लगे और मुस्कुराकर आँखें बंद करके आसन लगाकर बैठ गए !

फिर कुछ ही देर बाद स्वामी गुरूमुखदास जी ने वह लोटी, जो जल से भरी थी ! भगवान शिव के मंत्र का जाप करते हुए **स्वामी सर्वानन्द जी महाराज** पर चढ़ा दी !

तभी सभी प्रेमियों की आँखें एक अद्‌भुत तेज से चौधियां गई ! सभी अवाक् होकर स्वामी जी को देखने लगे ! आश्चर्य वहाँ स्वामी जी नहीं थे ! वहाँ तो **'भगवान शिव'** बैठे थे ! जिनके सिर पर स्वामी गुरूमुखदास जी जल चढ़ा रहे थे ! उस वक्त कौन समझे ऐसे महापुरुषों की गुणगाथा को !

बस, कुछ ही क्षणों में ही वह दृश्य बदल गया ! स्वामी जी वापस अपनी अवस्था मे आ गए ! सभी ऐसे विस्मित थे जैसे कोई सपना देखा हो ! थोड़ी देर के लिए सभी अवाक् ! शान्त ! किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि इसे सच कहें या सपना ?

फिर आपस में धीरे-धीरे चर्चा शुरू की तो सबने एक जैसा ही अनुभव किया ! सभी को स्वामी जी में ही भगवान शिव के दर्शन हुए थे! सभी आनन्द विभोर उस अद्‌भुत अवर्णनीय घटना को याद कर-करके प्रसन्न होने लगे ! अपने भाग्य की सराहना करने लगे !

गुरु ही ब्रह्मा हैं - गुरु ही विष्णु हैं !
गुरु साक्षात् शंकर हैं - गुरु पारब्रह्म हैं !!

ऐसे शिव स्वरूप श्री गुरुदेव स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को हमारा नमस्कार हैं !

शत् शत् नमन ! कोटि - कोटि वन्दन !

संकलन / संपादक
प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज.)
श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदावाद (गुज.)